कविताएँ

निकोला वप्त्सारोव

कविताएं



अखिल भारत शांति परिषद्

अनुवादक

डा. राम विलास शर्मा

मूल्य

२ रुपये

डी पी सिन्हा द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली मे मुद्रित और ओमप्रकाश पालीवाल द्वारा अखिल भारत शान्ति परिषद, १४ मुंशी निकेतन आसफ अली रोड, नई दिल्ली की ओर से प्रकाशित।



निकोला वप्त्सारोव

निकोला वप्त्सारोव

अन्तर्राष्ट्रीय शाति पुरस्कार

वल्गारिया के कवि और राष्ट्रीय वीर निकोला वप्त्सारोव के
श्व शाति तथा राष्ट्रो के बीच मैत्री के लिए महान योगदान के
पलक्ष मे विश्व शाति परिषद उन्हे १९५२ का शाति पुरस्कार देने
ा निर्णय करती है।

फ्रेडरिक जोलियो-क्यूरी
विश्व शाति परिषद के अध्यक्ष

पेत्रो-नेनी
अन्तर्राष्ट्रीय शाति पुरस्कार
समिति के अध्यक्ष

डापेस्ट, १६ जून, १९५३



सूची

भूमिका	३
प्रणय गीत	६
सघप	१०
मेरा देश	११
एक गीत	१२
विदा	१४
यह धरती	१५
देश	१६
रोमास	१६
एक पत्र	२१
वसत	२४
याद	२५
इतिहास	२८
स्पेन	३२
आस्था	३[illegible]

एक स्वप्न	३८
साथी का गीत	४०
पत्नी का गीत	४१
पत्र	४३
कारखाना	४७
द्वंदयुद्ध	५०
हैदूक का गीत	५४
मा	५५
सिनेमा	५६
देश की बात	६२
इसान का गीत	६४
कारखाने मे वसत	७०

★★

भूमिका

निकोला वप्त्सारोव बलगारिया के राष्ट्रीय कवि हैं। उनकी रचनाओं मे उनकी मातृभूमि का प्राकृतिक सौन्दर्य, जनता के मानवीय गुण, मजदूर वर्ग की कठिनाइयां और क्रान्तिकारी जोश अच्छी तरह व्यक्त हुआ है। उनका जन्म १९०९ मे पिरिन पर्वत के पास बान्स्को नाम के कस्बे मे हुआ था। यह पिरिन पर्वत वप्त्सारोव की कविताओं में छाया हुआ है, वह उनके गीतों की प्राकृतिक पृष्ठभूमि है। बाईस वर्ष की आयु म उन्होने जहाज द्वारा पूर्व की यात्रा की। इसी यात्रा म वह फामागुस्ता भी आये जिसका उल्लेख उनकी "पत्र" नाम की कविता मे है। १९३२ में उन्होंने नौसैनिक विद्यालय म शिक्षा समाप्त की।

वप्त्सारोव मजदूरों के जीवन को बहुत अच्छी तरह जानते थे। वह स्वयं मजदूर रहे थे। कुछ दिन उन्होंने काडबोर्ड फक्टरी मे काम किया। फिर मशीन ऑपरेटर हो गये। इन दिनों मजदूरो को सगठित करने, उनकी राजनीतिक चेतना को निखारने और उन तक साहित्य और कला की चीजें पहुचाने में उन्होंने बहुत परिश्रम किया। कारखाने के मालिकों ने उन्हे नौकरी से बरखास्त कर दिया। सोफिया नगर मे आकर उन्हे भूख और बेकारी का सामना करना पडा। एक मिल मे उन्हे फायरमन का काम मिला। इस समय के जीवन की छाप उनकी अनेक रचनाओं मे

मिलती है। इसके बाद उन्होंने और कई जगह काम किया, साथ ही उनकी राजनीतिक कार्यवाही भी चलती गयी।

यूरोप में उस समय फासिस्ट ताकतें उभार पर थीं। वप्त्सारोव की कविताएं पढ़ कर पता चलता है, यूरोप के सचेत मजदूरों ने इस उभार के विरुद्ध कितनी वीरता से संघर्ष किया था। अपनी क्रांतिकारी निष्ठा और मजदूर वर्ग से अटूट सम्पर्क के कारण वप्त्सारोव की आस्था अडिग रही। फासिस्ट बर्बरता उनके मनोबल को कुचल नहीं सकी।

दूसरा महायुद्ध आरम्भ होने के बाद बल्गारिया का शासक वर्ग विदेशी फासिस्टों से मिल गया। वहां के क्रांतिकारी मजदूरों तथा अन्य देशभक्तों ने फासिस्टों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष चलाया। १९४२ में वप्त्सारोव पकड़ लिये गये और फासिस्टों ने उन्हें प्राणदंड दिया। उनकी यह विजय क्षणिक थी। सोवियत सेना और बल्गारिया की जनता ने उनका अंत कर दिया और वप्त्सारोव के नवजीवन के सपने उनके देश में चरितार्थ हुए। ५३ में विश्वशांति समिति ने उन्हें शांति पुरस्कार देकर उनकी स्मृति को श्रद्धांजलि चढ़ायी।

वप्त्सारोव ने जिस तरह की जिन्दगी देखी थी, उसमें काफी कड़वाहट थी। इसे व्यक्त करने के लिए वह मूर्ति-विधान में ऐसे उपमान एकत्र करते हैं जिनसे साधारणतः कविता प्रेमी परिचित नहीं होते। उनके छन्दों का उतार चढ़ाव, ओज और घृणा या करुणा और प्रेम के भाव अच्छी तरह व्यक्त करता है। प्रकृति, सौंदर्य और जीवन से उन्हें बेहद प्यार है। वे मजदूरों के जीवन को रंगचुन कर आदर्श रूप में चित्रित नहीं करते। उनकी सचाई कविता में नयी जान डाल देती है। उनकी रचनाओं में नाटकीयता के साथ-साथ लिरिक-कविता की स्वतःस्फूर्त गेयता भी है। उनकी छोटी कविताओं में थोड़े से शब्दों में बहुत कुछ कहा गया है। इस संयम के कारण उनकी व्यंजना शक्ति और भी बढ़ गयी है।

वप्त्सारोव देशभक्त होने के साथ मानव मात्र के कवि हैं। उन्हे स्पेन के योद्धाओ से वैसे ही सहानुभूति है जसे अपने यहा के श्रमिको से। उनकी कविताए पढ कर मानवता के भविष्य मे हमारी आस्था दृढ होती है।

अनुवाद मे अनेक तरह के वृत्तो और शलियो का सहारा लिया गया है। उद्देश्य रहा है, अधिक से अधिक कवि के भावो और शली के गुणो की रक्षा की जाय। आशा है जिन लोगा ने निराला जी के "परिमल" की रचनाए पढी हैं, उन्ह यह अनुवाद बहुत अटपटा न लगेगा।

आगरा, २४-११-५६ राम विलास शर्मा



कविताएं

प्रणय-गीत

वज्र बन कर फिर दबाता आ रहा है
लोमहर्षक भय !
युद्ध ! उसके नाम से ही पिस गया है
यह निराश हृदय !

छा गयी है सब कहीं कल-कारखानो मे
असीम घुटन ।
है उसी से व्यथित सा सूर्यास्त भी
औ' शान्त नील गगन ।

बद हो राहे सभी, यदि शत्रु का घेरा
पडे भीषण,
पाप है क्या यदि मना ले हम कहीं भी
प्यार के दो क्षण ।

बरसती हो गोलिया जब, मशीनो की
घनघनाहट पर,
पाप है क्या फूट निकले यदि हृदय से
प्रेम का मृदु स्वर ?

दृष्टि हो जब लक्ष्य पर, सीमित बहुत
लगती हमे यह प्रीति ।
गा सका हूँ प्रिय ! इसी से एक छोटा ही
प्रणय का गीत ।

संघर्ष

ठन गया है महाभारत, कठिन है संघर्ष,
दया - ममता का नहीं है काम।
एक धरती पर गिरा, आया नया रणशूर,
पूछता है कौन किसका नाम।

एक घातक वार, फिर भू मे शयन चिरकाल,
अति सरल है समर की यह रीति।
किन्तु होगे रण-प्रलय मे सूरमा सब साथ,
अमर है जन की परस्पर प्रीति।

मेरा देश

देश हमारा तना हुआ है जिसके ऊपर
नीला स्वच्छ गगन।
जलते तारादीप साँझ को, चुभते जैसे
निकली अरुन किरन।

चला रात को दीवालो की छायाओ म
छिपता घर की ओर।
लगा, यही पर छिपा हुआ है कही घात मे
दुश्मन जैसे चोर।

मुझ जैसा ही प्यार करो सब इन्सानो को—
माता ने शिक्षा दी।
प्यार करूंगा, किन्तु चाहिये सबसे पहले
अन्न और आजादी।

एक गीत

पिरिन पर
झंझा मे
झूमते है वन ।
दूर हम
युद्ध को
चले सात जन ।
छूट गयी
शीघ्र ही
पिरिन की चोटी और
तारो से भरा हुआ
ऊपर गगन ।

झाडियो मे पशुओ के साथ हम सोये ।
सीमा के पार हम सरकते आये ।
घास पर लगा हमे
घुल मा गया है खून हमारे पिताओ का,
पत्तियो ने कहा मानो
यही है समाधिस्थल
हमारी माताओ का ।
धरती पर
देख कर रक्तधार,

समझ गये यही पर दफ्न है
पहले पहल का हमारा प्यार।

युद्ध को चले थे
सात जन साथ-साथ,
लौट कर आये बस तीन ही
उस रात ।

विदा

[पत्नी के प्रति]

दूर से चलता हुआ यात्री, अचानक, स्वप्न मे यदि,
देखने आऊ तुम्हे तो एक बार,
यह न कह देना, अभी बाहर थमो तुम,
और भीतर बद कर लेना न द्वार।

पास आकर बैठ जाऊगा, निहारू गा तुम्हे चुपचाप,
चारो ओर होगा अधकार।
जब नयन भर देख लूगा, स्नेह से चुम्बन करू गा,
और चुपके से कहूँगा—नमस्कार।

यह धतरी

यहा की धरती, मै जिस पर चलता हूँ,
जिस पर वसन्ती बयार वहती है।
यह मत समझना कि हुआ है धोखा,
यह देश मेरा नही, धरती विदेशी है।

देखता हूँ सुवह से काम में लगे हुए
स्याह मजदूरो की जाकिटो की पाति,
हम सव का एक ही दिल है, दिमाग है,
फिर भी न प्यार मुझे—देश की भाति।

देश की धरती पर वसन्ती हवा है,
सुनहरी धूप की लहरे मचलती हैं,
सुनता हूँ धरती के हृदय की धडकन,
फ़लो की अरधाने ऊपर उछलती हैं।

देश ! तेरी स्मृति से ही आती है खून में
नई रवानी, छाती चौडी हो जाती है,
देश ! तेरी धरती है रक्त से सीची हुई,
विद्रोह-भूकम्पो से जो डगमगाती है।

देश

धुधले से दिखते हैं,
वर्षा और धुन्ध मे,
पिरिन के नभचुम्बी,
ग्रेनाइट गिरिशृंग।

निर्धन ग्रामो पर
उडते हैं गरुड गगनचारी
और मैदानो मे
करता है विषम सीत्कार से
पवन भी शान्ति भग।

एक समय
ऐसा भी था जब मैं
उडता था स्वप्नो के पखो पर
अबोध सरल हृदय।

जीवन स्वच्छन्द था,
जगमग,
गीत सा उल्लासमय।

और अब जूझा हूँ
धुए से, ग्रीज से, मशीनो से।

परिचित हूँ भूख की तडप से,
बन्धन से, अन्न के लिये विराट्
मानव-संघर्ष से।

दर्द ने कराह उठा
भीतर से टूट ना गया मन।
बन्धन से मुक्ति नहीं,
मिला नही आश्वासन।

मन में कडवाहट से
देखा जब घूम कर
थूक दिया तुम पर
और खुद अपने जीवन पर।

आज तुम पास हो
मा से भी अधिक तुम पास हो।
मैं हूँ पर रक्त मे सना हुआ,
रक्त जो बहा है व्यर्थ ही।

धन से विदेशियो के
लडते हैं योद्धा जो तुम्हारे,
उन्ही के रक्त से
दम सा घुटता है रात को।

मेरे प्रिय देश
यह रक्त जो फट कर बहता है
सालता है हृदय को,
बेधता है मर्म को।

जानना चाहता हूँ एक बात—
क्या अनिवार्य था यह रक्तपात ?

चारो ओर अन्धकार
और अन्धकार मे चारो ओर
भूख और श्रम और निराशा का प्रसार।

पिछडे ही रहे हो देश तुम सदियो से!
किन्तु सुन पडती है कही-कही
नयी धडकन अब।

एक-एक कर उठ खडे हुए
कितने कल कारखाने।
गूंजता है हवा मे
यन्त्रो का घोर रव।

किन्तु मेरे देशवासी
वैसे ही श्रम करते हैं और मरते हैं,
जैसे वे मरते थे
पुरातन युगो मे।

गोरसे और दाहमे के देश तुम!
तुम्हे प्यार करता हूँ।
पाल-पोस कर तुमने वज्र सा बनाया मुझे।

और मेरे नवयुवक-हृदय मे
अंकित है सर्वहारा-उद्देश्य,
नित्य फहराती है
चचल पताका वहा
अन्नहीन वस्त्रहीन जनो की।

रोमांस

आज मैं रचूँगा
एक कविता,
हो वतमान
जिसमे नये युग की आन-बान,
जिसमे हो लौह पर-स्पन्दन
जैसे गगन मे
उडते है उत्तर से दक्षिणी ध्रुव तक
क्षिप्रगति वायुयान।

क्यो ये आह ?
क्यो यह रोना-कलपना ?
मिट गया रोमान्स क्या
और पीली पड गयी
पुरानी रोमाटिक कल्पना ?

गूजता है ऊपर
उन्मुक्त नील गगन म यन्त्र घोष,
यही है रोमान्स।

समझ नही सके तुम
छद वह ? सुना नही सगीत ?
फिर क्यो हुए निराश ?

सुनो संगीत वह,
बढी यदि उस पर आसक्ति,
दृढ लौह-परों की
मन म भर जायगी शक्ति।

ये उत्पाती विहग
देंगे धरा को दान,
इनके संगीत मे छिपा है
मानव - कल्याण ।

उडते हैं खेतो पर
शस्य लहराता है जहा अपार,
और उन शिखरो पर
जहा वर्ष भर छाया रहता है
हिम-तुषार ।

नवयुग की नयी शक्ति,
उडते हैं गगन मे
क्षिप्रगति वायुयान ।
नये रोमान्स की घोषणा—
जिससे अनुप्राणित है
वर्तमान ।

एक पत्र

याद है तुम्हें क्या, समुद्र और मशीनें,
जहाज मे कोठरी की सीलन ?
फिलिपिन द्वीपो को फिर से देखने की,
उमगो से भरा हुआ मन ?
और फामागुस्ता के ऊपर खिले हुए,
तारो का अथाह गगन ?

याद है तुम्हें कैसे जहाज के ऊपर
खडे होते सभी मल्लाह,
साझ को लहरो के उस पार डालते
दूर तक अपनी निगाह,
उष्ण कटिबन्ध की बयार सूघने को
कैसा था मन म उत्साह !

और तुम्हे याद है, कैसे धीरे - धीरे
बुझ गयी सभी आशाए,
इन्सान के ईमान, नेकी और सचाई की
हमारी मृदु भावनाए,
मिट गयी उभरते रगीन रोमान्स की
सुन्दर, सुखद कल्पनाए ।

याद है, हम तुम बहुत ही छोटे थे,
फस गये जाल म अचानक,

आरों से दया की भीख मागते रहे,
मिट गयी जवानी की चमक,
दुनिया की रीति हम बाद मे समझे,
मर खप चुके जब देर तक।

कुछ दिन बाद यह सब कुछ बदला,
और तेज नफरत से भर गया मन,
जैसे किसी को लग जाय कोढ और
सड जाय सारा बदन,
गहरी निराशा ने ऐसा डसा हमे,
बस गयी खून मे घुटन।

ऊपर आकाश मे उडती निकल जाती
समुद्री बत्तखे सुन्दर,
शून्य था विराट और ऐसा दमकता था
जैसे नीलम का मन्दिर,
क्षितिज के पार वही पाल छिप जाते थे
साँझ को शून्य के अन्दर।

हम तुम पयाल मे एक साथ सोये थे
कैसे वे नाते भुलाऊ ?
आज मैं प्रसन्न हूँ, पाया है नवजीवन,
आस्था की बात यह सुनाऊ ?
अपना सिर धुनूँ क्यो ? हृदय का कोप अब
क्यो न सघर्ष म लगाऊ ?

यह नवजीवन वापस लायेगा
फिलिपिन द्वीपो की चाह,
फामागुस्ता के ऊपर खिले हुए
तारो का गगन अथाह,

उष्ण कटिबन्ध की मादक बयार को
सूंघने का नया उत्साह !

फिर दृढ़ होती है एक नयी आस्था,
सुनता हूँ इंजन की धड़कन,
काश तुम जानते छल और माया से,
कितना व्यथित है मेरा मन,
यह नवजीवन वैसे ही निश्चित है
जैसे प्रभात का आगमन ।

भले ही रोशनी परों को झुलस दे,
सुन्दर प्रभात तो फिर होगा,
धरती अन्याय की केंचुल उतारेगी,
लोगों का नया जन्म फिर होगा,
और ऐसी घड़ी में मौत का आना भी
एक नये गीत का स्वर होगा ।

वसन्त

वसन्त के गीत अभी गाये नही, उत्सव मनाया नहीं
धुधले से सपनो मे छवि ही देखी है।
वृक्षो की कोपलो को छूता हुआ उडता है,
सुन्दर वसन्त की गति नही रुकी है।

मेह और आधी के साथ तुम आओगे,
खून से भीगे हुए घाव धुल जायेगे,
तुम्हारे उद्धत और उद्दाम वेग से
आशाओ के नये फूल खिल जायेगे।

पके हुए खेतो पर पक्षी चह्चहायेगे,
उडेगे ऊपर वे नीले आकाश म।
कैसे आनन्द मे करेगे काम सब,
भाई से भाई अब गले मिल जायेगे।

एक बार आखो के सामने से तैर जाओ,
जीवन बरस जाय निजन राहो पर,
एक बार देख लें तुम्हारी सुहानी धूप,
फिर मर जाने दो मुझे बैरीकेडो पर।

याद

मेरा एक साथी था,
बहुत अच्छा साथी,
लेकिन तकलीफ मे खासता था।
झोकता था कोयला,
बोरे मे भर भर लाता था,
और राख झाडता था,
लगातार बारह घटो तक,
रात की पाली मे।

अपने इस साथी की
याद हैं आखें मुझे,
बेहद प्यास से
पीती थी किरन को
भेद कर धुन्ध को
पहुँचती थी जो हमारे पीजडे मे।

तेज ज्वर के समान
प्यास फूट पडती थी,
आता था वसन्त जब
बाहर सुनाई देती पल्लवो की मर्मर,
और नीले नभ म तैरते निकल जाते
चचल विहग शिशु।

प्राणों को तडप वह, दुसह वेदना
अपार वेदना,
छूती थी मर्म को।
थोडी सी दया बस चाहती थी प्राणें व
अगले वसन्त तक—
दूसरे वसन्त तक ।

अपने सौन्दर्य में डूबा हुआ
आ गया वसन्त फिर,
सुनहली धूप और सुखद बयार
और फलों की गन्ध लिये।
नीले आकाश में
उडती थी लपटें गुलाब की।
किन्तु अन्धकार था हमारे अन्तर में
जीवन था भार,
शुष्क, नीरस, उत्पीडक।

और फिर जीवन की गति ही बदल गयी।
व्वायलर घडघडाया।
पता नही क्या हुआ।
सभव है बन्द हुआ।
इसलिए कि मेरा युवक-साथी
सदा के लिए
इस लोक से विदा हुआ।

शायद यह भ्रम हो।
सभव है भला वह व्वायलर चाहता हो,
वही परिचित हाथ
झोंके फिर कोयला आग में।

पता नही ।
सभव है ऐसा हो ।
लगता था, ब्यालर धडधडाहट मे कहता था,
कहा गया साथी वह ?

साथी तो चला गया।
बाहर वसन्त है
दूर नीले नभ म
तैरते निकल जाते
चचल विहग शिशु
जिन्हे वह साथी अब
देखेंगे कभी नही ।
ऐसा था युवक वह
बहुत ही अच्छा साथी ।
लेकिन तकलीफ म खासता रहता था।
झोकता था कोयला,
बोरे म भर कर लाता था,
और राख झाडता था
लगातार बारह घटो तक
रात की पाली मे ।

इतिहास

क्या इतिहास के धुधले सफो पर
कही भी लिखा है हमारा नाम ?
गुमनाम दफ्तरो, कल-कारखानो मे
पिसते ही रहना है जिनका काम ?

खपते रहे हम रोज ही खेतो में
खाकर बासी रोटिया और प्याज।
लानत भेजते रहे जिन्दगी पर
कहते रहे — इस पर गिरे गाज।

हमी ने भरा है तेरे पृष्ठो को
क्या तू न मानेगा इतना अहसान ?
हमने बुझाई है प्यास तेरी युद्ध मे
लाखो जानें करके कुर्बान !

इतिहास करेगा युगो की चर्चा
और भूल जायगा जीवन - प्रवाह,
किसको रहेगी याद इन्सान की
दुख की कहानी अगम अथाह ?

कवि जन करेंगे प्रगति की चर्चा,
कहेंगे आगे बढ गया ससार !
लेकिन जो अनलिखे दुख थे हमारे
कौन करेगा उन पर विचार ?

उस जिन्दगी की खोज हम क्या करें
जो जिन्दगी हो चुकी है बर्बाद ?
आ रही है जहा से जहर की भभक
तल्खियो से भरा है जिसका स्वाद।

खाइयो-खदको मे हम पैदा हुए,
काटो की छाह मे पल कर बडे हुए।
याद है माताए —पसीने मे लथपथ,
सूख से सूखे ओठ भीचे हुए।

रिाजा मे मक्खियो की तरह मर गये,
घरो मे औरतें सोग करती रही,
सोग के बाद वे गीत गाने लगीं,
गीत को जगती धारा सुनती रही।

खाइयो के बाद हमी जीते रहे,
खून और पसीना एक करते रहे,
जो भी मिला काम हमने उठा लिया,
बैल की तरह दिन रात मरते रहे।

हमारे पुरखा ने यही सिखाया था,
सदा से है यही दुनिया की रीति।

कौन इस मेहदी रीति को माने अब ?
कायम करेंगे हम नयी नीति।

निकल कर आ गये बाहर मैदान में
दुनिया का मोह और घर-द्वार छोड़,
पुरी में लगा जैसे नयी जिन्दगी है,
चमकीली, सुन्दर और बेजोड़।

गली कूचों में और चायखानों में
करते रहे हम सुख का इंतजार,
रात को हमेशा देर से लौटते
सुन कर वही आखिरी समाचार।

तसल्ली मिलती थी हमें आशाओं से
बोझ बन गया था ऊपर आसमान,
हू-हू करती हुई हवाएं चलती थीं,
सह न सकते थे हम वह तूफान।

इतिहास ! तेरे अनगिनत सफों में
कहेगी यही हर पंक्ति और अक्षर,
बहुत दुखी थे ये सभी बेचारे,
तड़प उठेंगे लोग यह पढ़ कर।

बड़ी बेरहमी से पीसा है जिन्दगी ने,
भूखे मुंह हमारे कर दिये लहूलुहान !
खूंखार पंजों की मार खाते हुए
हम सभी हो गये हैं कुछ बदजबान।

नीद से चुरा कर रात की कुछ घडिया
मैं जो लिखा करता हूँ ये चद कविताए,
इनमे गुलाब या चदन की बू नही,
इनमे धधकती हैं ग्रीष्म की ज्वालाए।

सख्तियो और परेशानियो के लिये
हम नही चाहते हैं कोई इनाम,
हम नही चाहते छपे कैलेण्डरो मे
उम्दा सी तस्वीर, या हमारा नाम।

सुनाना उन्हे यह सीधी सी कहानी
जिन्हे हम देखने को रहेगे न जीते,
कहना उनसे जो आय हमारी जगह,
मद की तरह वे लडे थे हिम्मत से।

स्पेन

क्या था स्पेन मेरे लिये ?
भूला हुआ दूर का एक अजनबी देश,
पुराने सामन्तो का,
और ऊचे पठानो का देश।
क्या था स्पेन मेरे लिये ?
निर्मम प्यार की जलती हुई आग,
खून मे अजब वहशी नशा,
चमकते नेजे और रात का सगीत,
इश्क और जलन का गीत।

अब मेरे भाग्य का नाम है स्पेन।
उसकी जीत पर है जिन्दगी का दारमदार।
उसकी आजादी के विकट सघर्ष मे
मैं भी हूँ पूरी तरह साझीदार।

इस सघर्ष से स्पेन की जीत से
मन मे उमडता है असीम उल्लास,
मेरे तन-मन की भी शक्ति उसे मिल जाय,
क्योकि उसकी शक्ति पर मुझे है विश्वास!

लडते हैं हम तोलेदो की तग सडको में,
जूझते हैं सूरमा माद्रिद के नाको पर,

मशीनगन की चौकियो पर पडे हुए
करते हैं वार हम शत्रु के लडाको पर।

एक मजदूर-साथी, सूती कमीज मे,
गोलियो से घायल पडा है मेरे पास,
आखो पर खिंची है सिर की टोपी और
गर्म खून बहता है तन से अनायास।

मेरी रगो से जो बहता है गर्म खून
वही वह रहा है यहा इस तन से,
मैंने पहचान लिया, मेरा यह साथी है,
हम साथ काम करते थे बचपन से।

एक ही भट्ठी मे दोनो धधकाते थे
आग—और झोकते थे कोयला साथ-साथ।
अब नही कुचली जा सकती हैं उमगे,
अब हो सकता नही इन पर वज्रपात।

सो जाओ प्यारे साथी, शान्ति की गोद म,
ऊपर उठेगी और रक्तरजित पताका।
मिलेगा तुम्हारा रक्त हमारे रुधिर से,
प्रेरक बनेगा वह रक्त विश्व-जनता का।

तुमने दिया जो खून अभी भी बहता है,
गावो मे, शहरो मे, कल-कारखानो मे।
पैदा करता है मर मिटने का नया जोश,
नयी आग मेहनतकश इन्सानो म।

हार सकते हैं मजदूर भी हिम्मत क्या ?
अटूट सफो म बढेगे लगातार।

मेहनत करो और लड़ने की ठानी है,
इन्हीं के रक्त से आजाद होगा संसार।

तुम्हारे रक्त से ही बनते हैं बैरीकेड,
वीरों में उत्साह, खून वह तुम्हारा है।
अभय, आनन्द से नारा हम लगाते हैं
माद्रिद हमारा है, माद्रिद हमारा है।

संसार हमारा है, कोई भय नहीं मित्र,
विस्तृत विकासमान विश्व ही हमारा है।
दक्खिनी आकाश के नीचे सोयो शान्ति से,
अजेय जनता का शिविर तुम्हारा है।

आस्था

देखो यह अमरत्व जीवन,
सुनो मेरे प्राणों का स्पन्दन,
गानों का गुंजन,
गात जिनके लिए
तन मन धन सब अर्पण।
निर्मम क्या है रण,
जीवन है सदय चिरन्तन।

सदय चिरन्तन।
समझा न किन्तु कभी मेरे लिए
घृणित है जीवन।
जीवन के वज्रदन्त
भले पीस डालें मुझे
तो भी प्रिय होगा मुझे,
अति प्रिय होगा मुझे,
यह मानव-जीवन।

गले में फाँसी का फन्दा ही डाल दें,
पूछें फिर—"एक घड़ी और क्या
जीना तुम चाहोगे?'
कहूँगा—"हाँ।
जीने दो।

तुरत ही फांसी का फन्दा यह खोल दो।"
जीवन के लिए ऐसा क्या है जो
कर न सकूंगा मैं ?
उड़ूंगा बन कर विमान
आसमान मे।
अग्निबाण बन कर
पार कर अन्तरिक्ष
खोज सकता हूँ मैं
अतल आकाश मे
दूर के अदृश्य नक्षत्रों को।

नील नभ देख कर
सदा ही विह्वल होगा
हृदय आनन्द से।
जीवित हूं, जीवित रहूँगा मैं।
कितना आनन्द है इसी एक ज्ञान मे।

मेरी इस आस्था से
एक कण भी तुम बटोरना जो चाहोगे,
तड़पूंगा रोष से
जैसे तड़पता है
घायल हो व्याघ्र कोई।

क्या होगा मेरा अस्तित्व तब ?
क्षुब्ध होगा मन
उस आस्था की चोरी से।
सीधी सी बात है,
रीता हो जायगा
आस्था के बिना अस्तित्व ही।

सभव है सोचते हो,
काश तुम मिटा सकते
मेरी इस ग्रास्था को—
कि ग्रच्छे दिन ग्रायेंगे
कल यही जीवन सुखद होगा,
प्राणमय, सगीतमय।

ग्रास्था को कुचलोगे ?
गोलियो से छेदोगे ?
व्यर्थ है प्रयास यह।
वज्र सी कठोर छाती
कवच है ग्रास्था की।
गोलिया जो छेद सके मेरी दृढ ग्रास्था को
ग्रभी वे ढली नही,
ग्रभी वे बनी नही।

एक स्वप्न

"लोरी तुम जागते हो ?
बात मेरी सुनते हो ?"
"चुप रहो और सिर नीचा करो ।
जानते हो,
दुश्मन है दो गज की दूरी पर,
और पाबन्दी है यहा बात करने पर ।"
"लेकिन मेरा सपना
सुन्दर था कितना !"

"कैसे शुरू हुआ था, ठीक है, याद आया,
जग खत्म हो गयी है, मिल गयी आजादी,
कल-कारखानो के, और सभी चीजो के,
हमी लोग मालिक हैं, फिर गयी मुनादी ।

करता हूँ काम मैं उसी कारखाने मे,
वही सब मशीनें हैं मेरी जानी-पहचानी,
लेकिन अब दमकती हैं जैसे हो सोने की,
सब मे आ गयी है शक्ति मानो अनजानी ।

तुम भी हो उसी कारखाने मे ओवरसियर ।
कहते हो—आज तुम दो सौ बोल्ट ढालना ।
हम दोनो बहुत ही मगन हैं । मै कहता हूँ—
बहुत ठीक ! सारा काम मेरे जिम्मे डालना ।

कैसी सुहानी धूप चारो ओर फैली हुई !
कैसी निर्दोष हवा, नीला है आकाश !
कैसे आनन्द से सास हम लेते हैं !
हम वही हम हैं ! होता नही विश्वास !"

लोरी ने मित्र की आखो म झाका,
देखा, वहा खेलती है बाल सुलभ आशा-सी,
मुस्कराया, बनते हुए बोला यो, ताज्जुब से,
"फर्नान्देज ! तू तो है स्वप्न लोक का वासी।"

पूरब मे धुधले सितारे हुए, भाग चली रात।
युद्ध का आह्वान, फिर आक्रमण, और आघात पर आघात।

साथी का गीत

तुम नही लौट कर आओगे, फर्नान्देज !
बरसी है आग मशीनगनो से पंक्ति पर।
पागल कुत्ते सा हू-हू करता है
चारो ओर निर्जन मे अब भी हवा का स्वर।

पहले की उंगलियो से खुरखुर की आवाज,
उन्मत्त पीडा से फिर किया अट्टहास।
किसी ने हाथ में साधा है हथगोला
खीची है पिन, फिर खडा वही बदहवास।

सबो से आगे बढ तुम्ही ने वार किया,
पास ही सुनी मशीनगनो की गर्जना।
तुम लडखडाये, फिर सिर से खून बहा।
नही अब लौटने की कोई सभावना।

कब्जा कर लिया है हमने ढलान पर,
टूट गयी शत्रु पंक्ति, छोड घर भागे रण।
काश तुम देख पाते दृश्य यह फर्नान्देज,
कितने प्रसन्न होते साथी तुम उस क्षण !

पत्नी का गीत

सूने घर के आंगन मे,
छायी है शान्त उदासी।
युद्ध खत्म हो गया, न लौटा
फिर भी एक प्रवासी।

रो रो कर मैंने समझाया
तुमने एक न मानी।
चले गये तुम, साथ रह गया
बस आखो का पानी।

सुनती थी बस एक हृदय की
दुख मे डूबी धडकन
आशा से बाहे फैलाती,
मिलने को उत्सुक मन।

मुझे घृणा है प्रिय फर्नादेज़
एक शब्द से ज्यादा,
आजादी—जिस पर तुम रहते
मिटने को आमादा।

शायद बात तुम्हारी सच हो,
फिर भी है मन मे डर,

व ३

उस डर से ही सिहर-सिहर
उठता है मेरा अन्तर।

सूने घर के आगन में
गहराई शान्त उदासी।
बाहर आहट हुई, न लौटा
फिर भी एक प्रवासी।

पत्र

पता श्रीमती
फ्रांसिस्का लाबोरे
हुएल्वा

मा,
फर्नांदेज मारे गये।
दफ्न कर दिये गये है
धरती के भीतर—फर्नांदेज।
माद्रिद के नाके पर
खेत रहे फर्नान्देज।

ऐसे तो भले थे फिर जाने क्यो शत्रु ने
असमय ही खत्म कर दिया उनका जीवन।
हा, वह खेत रहे लेकिन जो साथी है,
वे लडते है, खत्म नही हुआ रण।

मा, एक तुमको ही मै सुना सकती हूँ
अपने हृदय की सारी दुख भरी बाते,
जानती ही हो तुम कि युद्ध मे क्या होता है,
बहते है आसू जाने कितनो की आखो से।

ढूढती हूँ दूसरा की बहुओ की आखो मे
मिले वही मुझे कुछ दुख से सहानुभूति।

देखती हूँ उनकी भी आखें डबडबाई हैं,
एक सा ही दुख, वही आसू, वही अनुभूति।

सभव है तोप के गोले के टुकडे से
मोर्चे पर उनका भी प्रिय कोई मारा गया।
सभव है तोप के गोले के टुकडे से
कोई खूबसूरत जवान काम आ गया।

सभव है, मेरी तरह वे भी राह देखती हैं,
सोचती हैं शायद आ जाय कोई समाचार।
लेकिन नम धरती की गोद मे वे सोते हैं
और यहा लौटने का करते नही विचार।

माँ तुम यह सोच कर उन पर बिगडना मत
क्यो वे तुम्हे छोड कर लडने चले गये।
सभी ने पाप किया, एक फर्नान्देज ही
सचाई क्या है, इसे पहचान गये।

एक वही जानते थे इसानी जिन्दगी को,
कौन सी दुनिया मे रोशन सचाई है।
ऐसी तल्ख जिन्दगी से मरना ही बेहतर है
जानवर की तरह जीते रहना ही बेहयाई है।

रोटी तो मिलती थी। एक ही रोटी से
किसी तरह पेट हम दोनो का भर जाता।
लेकिन जो अब जन्म लेगा मेरी कोख से,
मा, क्या पेट उसका भी उसी से भर जाता?

रोटी के अलावा भी और कोई बात है,
समझ न पाऊगी जिसे आसानी से,
सब लोग जाते है, मिल कर लडते है,
इन सबका नाता है, क्या बस एक रोटी से ?

छिपने की जगह म कई लोग फस गये,
उनका जनाजा आज उठा था एक साथ।
अपनी ही आँखो से सब कुछ देखा था
लेकिन समझाऊ कैसे दूसरो को वही बात ?

जो सभी लोग वहा दफनाये गये थे,
एक नयी चमक थी उनके मुह पर।
देखा था मैने उनकी फैली हुई बाहो को
एक क्षरण झाक कर कफन के अन्दर।

मौत की घडी मे साथी सब एक हुए
एक इन्सान जैसे सोते थे एक साथ,
कफन म उन सब की खुली हुई आखो से
एक सा ही अनुपम फूट रहा था प्रकाश।

अब मै कभी भी उसे देख पाऊगी नही,
मोर्चे पर लडने गया था फर्नान्देज।
भरी जवानी म मेरा पति मारा गया,
धरती के भीतर अब दफन है फर्नान्देज।

तुम बूढे बाप से जिक्र न कुछ करना,
दुख से नही तो उनका दिल टूट जायेगा।

यहीं छिप जाना और चुपके से रो लेना,
कुछ भी कहा तो बूढ़ा बाप मर जायेगा।

अगर वे सच बात किसी तरह भाप जायें
कहना कि हम दोनों जीते हैं चैन से,
कहना कि सीखती हूँ लोरियां गाना मैं
जल्द ही नाती का मुँह वे देखेंगे।

मा, और लिखूँ क्या? तुम्हें सोच-सोच कर
दुख से अकेले में मन कैसे रोया!
पहुँचे तुम्हारे पास बहू का नमस्कार,
ताबेदार—दोलारेस मारिया गोया।

कारखाना

कारखाना । धुए के बादल छाये हुए ।
लोग सीधे-सादे । जिन्दगी कठोर,
बिना शृगार के,
पागल कुत्ता मानो गुर्राये ।

लडो और लगातार जम कर लडो ।
सख्त हो तन और मन दोनो ।
जगली जानवर के दातो से
रोटी का टुकडा तुम छीन लो ।

दायें, बायें, सिर पर
मशीनो की घरघर,
हवा है बासी, बेजान ऐसी
सास लेना मुश्किल ।

थोडी ही दूर पर
बसती हवा लहराती है खेतो पर ।
सूरज पुकारता है ।
ऊचे-ऊचे वृक्षो की छाया है
इस कारखाने की ऊची दीवारो पर ।
खेत भी अनोखे हैं
बिसरे, अनचाहे से ।

घूर पर फेंका है
दुष्टों ने नीले आकाश को
और सब सपनों को।

एक क्षण को भी रुके,
दिल अगर पसीजा,
तो बिना बात के
यह मजदूर की
मजबूत बाह कट जायगी।
कलों की घर-घर।
जोर से चिल्लाओ।
आवाज पहुच जाय
दूसरे साथी तक।

वर्षों तक चीखा हूँ
अनन्त काल तक।
दूसरे भी एक साथ चीखे थे—
कारखाना, मशीनें, कोने मे घसा हुआ आदमी,
एक साथ चीखे थे।

और इस चीख से ढला था इस्पात,
जिन्दगी को ढका है उसी के कवच से।
छूकर तो देखो जरा।
बाह टूट जायगी।

कारखाना चाहता है
ढक दे हमे अब भी
धुए की पर्तों से।
व्यर्थ है।

सीखते हैं जूझना,
सूरज को लायेंगे यही हम खीच कर।
मेहनत की स्याही से पुते हुए चेहरे,
पीडित मशीनो से,
रोज कारखाने मे ढलती है
एक साथ,
सौ-सौ हृदयो मे
एक ही फौलाद।

द्वंद्वयुद्ध

दोनो ही गुथे हैं, लगा है दाव,
जकडा है हाथ से हाथ, पाव से पाव ।
लहू की बूदें मेरे दिल से टपकती हैं
रह-रह कर अब तेरी सास भी फूलती है ।
जहरीली जिन्दगी !
तू ही हारेगी !

क्या तुझे दुविधा है ? दहसत और डर नही ?
देरा यहा पैतरा दुरुस्त है और दाव भी ।
निश्चय है मैं तुझे पछाडूगा
जान की बाजी इस जीत पर लगाऊगा ।

आज ही से नही है द्वद की शुरुआत ।
है दरअसल यह बहुत पुरानी बात ।
हम बहुत दिनो से
लडते रहे हैं बहुत जोश और दिलेरी से ।
मरोडी बाह और तोड दी कलाई,
कभी न भूलूगा मार जो अब तक खाई ।

फूट पडी गैस और बैठ गई
लोहे की खान,
दफन हो गये उसमे जिन्दा
पन्द्रह इन्सान ।

दफन हुई पन्द्रह इन्सानो की लाशे,
और उन पन्द्रह मे
एक था मै।

चाल के बाहर पडी है बन्दूक—
ठडी है लाश !
कही भी कुछ शोर-गुल नही, सुनाई देती नही
कही कोई आवाज !

कितना आसान है,
बिना सघर्ष के ले लेना किसी की जान !
चाल के बाहर पडा हुआ
मैं ही था
गोली से घायल इन्सान !

पानी से तर फुटपाथ पर
पडा है शेर-नर,
मारा है जिसे हत्यारा ने छिप कर !
बिछी है सुरगे ऊपर
गिरेंगे वज्र चौराहे पर।
लेकिन वह इन्सान
पडा है लहूलुहान,
उसकी निगाह अब ठढी है,
प्रेम और नफरत की आग वहा जलती है।
भीगे फुटपाथ पर पडा था मै ही बेजान !
मै ही हत्यारा का मारा हुआ इन्सान !

और तुम्हे याद है पैरिस के बैरीकेड ?
मारा गया था वहा बच्चा एक ?
मारा गया युद्ध मे। खून म लथपथ सारा गात,

धीरे-धीरे रगों का गम खून
मर्द हो गया जैसे इस्पात।
हल्की मुस्कराहट से खुले थे दोनों ओंठ,
और उसकी आखों में भरा था अपार जोश।
मानो वे आग अभी गाती थी
इन्कलाव की धुन सुनाती थी।
मौत के फन्दे में फसा हुआ, आहत,
मैं ही था बच्चा वह खून में लथपथ।

याद है तुम्हें एक इन्जन ?
आनन्द से करता हुआ गुन्जन,
भेद कर सघन कुहासा और हिमतुषार,
पछी भी जहा उड पाते नहीं एक बार,
शीत के पर्दे के उस पार,
जला कर विस्फोटक गैसोलीन,
उडता था वायुयान,
धरती की धुरी से घूम कर,
चीरता चला जाता आस्मान।
मेरे ही हाथों की कला है
नभचारी इन्जन।
सुनता हूँ उसके गुन्जन में
अपने ही हृदय की धडकन।
मेरी ही जमी थी निगाह
कम्पास पर,
उडा था मैं ही,
उत्तरी तुषार और कुहासा भेद कर।
यहा हूँ, वहा हूँ,
मैं सब कहीं हूँ।

टेक्सास का मजदूर,
खलासी अल्जीरिया का,
मैं ही क्या शायर नही हूँ ?
मुझ से यह जीतेगी,
नफरत से भरी हुई जहरीली जिन्दगी ?

जूझते ह दोनो ही
पसीने म लथपथ,
चुक गया है तेरा सब कसबल,
होती है निढाल तू
हर घडी, हर पल !
गडा दिये हैं तूने पजे मेरे तन म
शायद पास आती हुई मौत के डर से।
इस जहरीली जिंदगी के बदले,
हम अपनी मेहनत से,
रचेगे एक नया जीवन,
जिसकी हम चाह है,
सभी हिलमिल कर,
बहुत ही सुन्दर,
रचेगे हम नया जीवन।

हैडूक का गीत

तीन साल बीत गये, घर का मुह नही देखा है
हवा म उडती है पीली मुर्झाई हुई पत्तिया,
बीविया समझती हैं, अब वे विधवाए है,
हाथ मलती है और देखती है, पिरिन की चोटिया।

रात की मजिले बहुत दुखदायी हैं
बच्चो की याद से दिल मसोस उठता है।
थकन से चूर हम सोते हैं काटो पर
तकिये के नाम पर पत्थर ही होता है।

"नायक ! छतो से टपकता है पानी
खेतो मे खडी है घास जैसे ऊसर मे ।"
"तारो की छाह मे लगाओ निशाना,
हम जवा मर्द है, जूझेगे समर म ।"

हैडूक = डाकू

मां

धरती पर सभी माताए हैं एक सी।
एक से हैं उन सभी के हृदय।
देख लो चाहे उक्रैनी मैदानो मे
और चाहे परख लो जा कर सिरेनायका मे।

एक थी मा,
और उसका था बेटा
नौजवान, आजाद। बडा हुआ।
पास ही थी पिरिन की नभचुम्बी चोटिया
ककरीले ढलान, चट्टाने और देवदार।

बाप यहीं खेत रहा,
बेटा तब छोटा था।
अधेरे जगल मे हैदूक छिपा हुआ था
और वह पाशा पर आखें जमाये था।

पहाड के नीचे जलते थे गाव,
लाल-लाल दिखती थी पिरिन की चोटिया।
गाव का मालिक जालिम जमीदार
नोचता था भूखे इन्सानो की बोटिया।

दुख से आह भरती थी, देखती थी,—
बेटा हो गया है अब जवान बढ कर,

ग्रौर देखा, बेटे की ग्राखें चमकती हैं,
फिर जम जाती हैं बाप की बन्दूक पर ।

एक थी मा और उसका था बेटा,
अच्छा सा नौजवान होनहार बेटा ।
जब वह बडा हुआ,
जगल म चला गया,
पिरिन की अधेरी घाटियों मे खो गया ।
बीत गये कई साल,
उदास, दुख भरे, सूने मास ।
बधुआ को मिला नही चैन घडी भर का ।
सिमट गयी जगल की हरियाली पीछे को,
छोड कर पिरिन के निचले मैदानो को ।

रात को लौटते थे लोग कभी देर में,
अपराधी जैसे वे सहमे से आते थे ।
छिप कर आग मे कपडे जलाते थे
या फिर कारतूस धरती मे दफनाते थे ।

रात को छिटकते थे
तारे जब काली-काली चोटियो पर,
एक मा गाती थी लोरी यह
गोद मे छोटे से बेटे को लेकर—

झाको मत,
आवाज सुनो मत,
जब तुम बडे हो,
बागडोर सभालो,
तुम्हारी आखें कभी न लाल लाल हो ।
बाहर तूफान है,

गिरती है बर्फ आस्मान से ।
गर्म है गोद मेरी
कितना है यहा सुख !
सो जा मेरे बेटे
मा के प्यारे बेटे
तू मत बनना कभी खूँखार हैदूक ।

भोला-भाला प्यार भरा
बेटा वह बडा हुआ,
जगलो म गया नही,
बना नही हैदूक ।
लेकिन जब ब्याह हुआ,
एक दिन भाग गया,
बन गया कोमिता[1]
छोड कर घर का सुख ।

खून मे डूबे हुए
बीत गये कई साल,
खून मे लथपथ कई साल ।
पिरिन की चोटियो से बाज नीचे आते हैं ।
मोटे पड गये हैं, मुर्दा मास खाते हैं ।
पेडो के नीचे यहा
और हर ढलान पर,
बर्फ सी ठढी आखें
ताकती हैं उपर ।

लोग नही डरते हैं किसी जमीदार से,
गालिया देते हैं अब सुल्तान को ।
लेकिन अभी मूर्ख यह सोचते हैं

१ कोमिता अर्थात क्रातिकारी

ये सब मामूली लोग पैरों की धूल हैं।
लोगों ने यहां कुछ भी नहीं,
नफरत में नाक भर मिरोड़ ली।
लगा उन्हें, खत्म नभी होगी नहीं,
यह बदइमाफी और गुलामी।

कोमिता जन आ गये।
जगलों में नहीं छिपे।
खुले आम घूमते थे।

जगलों में, एक ही रात में,
चिमनिया उठ आईं, पाइप भी लग गये।
इस्पाती दांतों से,
रोटरी के चक्के से,
मोटे शहतीरों को
आरे काटने लगे।

एक मा
गोद में बच्चा लिये,
रात को गाती थी,
दरवाजा बंद किये।
कभी मत बनना कोमिता,
चुप हो जा बेटे,
हम हैं अकेले।

नहीं, कोमिता नहीं,
खच्चर नहीं था वह,
बेटा था एकदम ताबेदार।
लेकिन हड़ताल में उसके भी गोली लगी—
गाव में एक दिन आया यह समाचार।

सिनेमा

गेट पर भीड है।
जगमगे पोस्टरो पर
छपा है जोरा से —
"इन्सान का नाटक"।
और ताजदार सिक्का
मुट्ठी मे नम है।

सफेद चौकोर पर्दे पर
अधेरे हाल मे
मेट्रो का शेर ओंघाया सा
जम्हाई लेता है।
अचानक दिखते हैं
सडक, जगल,
नीला-नीला आसमान।

सडक के मोड पर
दो उम्दा मोटर गाडिया
टकराई।
एक म नायक है
दूसरी म नायिका।
नायक उतर आया कार से
फौलादी बाहो मे

नायिका को भर लाया।
धीरे-धीरे खोल दिया
नायिका ने फूली हुई आखो को,
वरौनिया उठा कर
देखने लगी वह
नीला-नीला आसमान।
वाह वाह !
खूब ही कसी हुई घोडी है।

खूब है बुलबुले,
पेडो मे गाती है,
पत्तियो से झाकती है
जहा पर नि शब्द नीलिमा।
और कुछ दूरी पर
हराभरा मैदान
मन ललचाता है।
कामातुर जौन —
चूमता है गेटा को।
व्यभिचारी ओठ
लिबलिब करते हैं।

बन्द करो !
कहा है यहा पर हमारे भाग्य की तस्वीर ?
कहा है नाटक ?
कहा हैं मैं ?
बोलो, जवाब दो।
हमारी रीढ पर
विस्फोटक वाल एक पिस्तौल साधे है
गोली से मारो को।

छाती मे धुआ है,
फेफडो मे तपेदिक ।
प्यार और दुख मे
यो ही क्या हम बोदे रहते हैं ?
जिन्हे प्यार करते है
उनसे क्या चमचमाती कार मे
यो ही हम मिलते हैं ?

प्यार जन्म लेता है
मेहनत मे, धुए म,
मशीनो की धडकन म ।
बुढापा, रोटी का सघष,
अनबोल, धुधले सपने ।
सस्ती तग खाट पर
हर रात कटती है ।
पता भी नही लगता,
कब हम घुल गये, मर गये ।

बात बस इतनी है ।
यही है नाटक इसान का,
बाकी सब झूठ है ।

देश की बात

रेडियो पर बहस छिडी है।
किस से ?
पता नहीं, शायद लोगों से।
बोते जाओ,
पैसा भी तो आखिर इसी का खाते हो।

"तुम्हारे हितों की रक्षा करने को
राज्य की शक्ति तैयार है।
बन्द करो नारे।
नीचे करो भडे।
सभी सन्तुष्ट हैं,
सुखी और आनन्द-मगन है।"

काफी की दूकान म
घृणा से थूकता है आदमी।
चारो ओर देख कर यो सिर हिलाता है
बडी बुद्धिमानी से
"कुत्ते की औलाद।
सोचते है आखो मे धूल भाक सकते हैं।
लेकिन खुदा ने क्या लिखा है किताब मे,
'जनता की आवाज खुदा की आवाज है।'"

"ठीक कहते हो तुम !"
भूख से कांपते कहा नौजवान ने।
"उन्नीस सौ पन्द्रह में
यही भूठ तब भी
कहा था न इन्होंने ?
लेकिन जो आज भी कहेंगे ये मरने को,
करेंगे मजबूर
गोलियों की बौछार सहने को,
तो क्या ?
मूर्ख भी समभता है,
अब वक्त आ गया है
अपनी सी करने का।
गम से भी बदतर है रोटी जो खाते हैं।
तल की हांडी भी खाली है।
इसीलिये मेरा विश्वास है,
हम सब का एक ही नारा है
सोवियत देश के साथ हो !
और इस दमन का नाश हो !"

इन्सान का गीत

"हमारे जमाने का इन्सान"—
विषय था वहस का,
एक महिला ने और मैंने
वहुत जोर मारा जिससे जीत ल
वहस का मैदान।

महिला का मिजाज था
बहुत ही खराव।
पैर पटक-पटक कर
देती थी जवाव।
भाषण था उसका
एकदम धाराप्रवाह,
शब्दो की भवर मे
अर्थ की नही थी थाह।
"रुकिये तो एक मिनट मेरी भी सुनिये।"
उसकी तो नीति थी—अपनी ही कहिये।
वोली वह, "अजी, चुप रहिये,
इन्सान से मुझे है नफरत।
आप मत कीजिये
उसकी वकालत।"
बोला मैं, "वही पर मैंने यह पढा था,

एक इन्सान ने गडासा उठा लिया,
अपने सगे भाई को उसने कत्ल कर दिया।
हाथ पैर धो कर वह चला गया गिरजाघर,
बोला फिर—अब हूँ मैं पहले से बहतर।"

भय से मैं काप उठा।
कुछ भी न कह सका।
और अपनी बात पर आगे मै न जम सका।
मैंने सुनाई उसे कहानी,
जैसे सुनाता कोई और सीधा आदमी,
और बोला—"बनाइये इसको कसौटी।
बात है मोगीला गाव की।
बाप ने कही पर धन छिपाया,
बेटे को पता चला,
चट उसने हथियाया,
साथ ही बाप को
ठिकाने भी लगायाँ।

जैसे ही बीता एक माह या हफ्ता,
पुलिस ने कर लिया उसको गिरफ्तार।
अदालत किसी की
खाला का घर नहीं,
हो गयी मुजरिम को
सजा मौत की।

डाल दिया कैदी को जेल के अन्दर,
मिल गया वहा उसे तसला और नबर।
और कुछ मिले उसे महृदय सज्जन।

पता नहीं एक दिन कैसे हुआ
उसमे अचानक परिवर्तन।
बोला वह—'कैसी चूक हुई मेरे भगवान।
दुखों का मारा, भूख से परेशान,
एक ही चूक में गिरता है इन्सान।
कटने के लिए हम
जानवर से यहाँ बंधे खड़े हैं,
जिधर भी देखो उधर
छुरा लिए जल्लाद अड़े हैं।
वाह री दुनिया। कितनी है निष्ठुर।
लेकिन यह जिन्दगी
शायद हो सकती है बेहतर।'

गीत वह गाने लगा।
शान्ति से गाता रहा।
आँखों के सामने सुनहले स्वप्न सा
जीवन का भव्य चित्र उडता रहा
और मुस्कराता रहा।

गीत वह गाता रहा।
गाते-गाते सो गया।
नींद में भी पडे-पडे वह मुस्कराता रहा।

कोठरी के बाहर खडे हुए
लोग फुसफुसाते थे।
दरवाजा खोल कर धीरे से
आ गये भीतर वे सहमे से।
सीलन से भरी हुई दीवाल
खडे देखते रहे।

विस्तर में पड़ा हुआ आदमी समझ गया,
आखिरी वक्त अब आ गया !
जिन्दगी का खेल यहां खत्म हुआ।
झपट कर उठा और खड़ा हुआ,
वध के लिए जाते बैल सा,
उन्हें घूरता हुआ।
लेकिन वह जान गया
व्यर्थ है भय !
अब तो उसे
मरना ही है !

छा गयी मुख पर अपूर्व अरुणिमा,
जगमगा उठी उसकी आत्मा।
आगे-आगे चला वह और सब पीछे,
विचित्र रुपहली थी वदन में सबके।
सन्तरी ने सोचा—अब फंस तो गये ही हो,
जल्दी से चलो, यह किस्सा भी खत्म करो।
बाहर वे राह में फुसफुस करते थे,
कोने और मोड़ जहां छिपे थे अंधेरे में।
आखिर वे आ गये खुले मैदान में,
उषा की लालिमा भी फैल गयी
ऊपर आसमान में।

सोचने लगा वह—कैसी दुख भरी,
अधी तकदीर है इन्सान की।
भूलूंगा फांसी के तख्ते पर,
यही क्या जिन्दगी का आखीर ?
नहीं, और जिन्दगी आयेगी बेहतर,

वसन्ती हवा से भी सुखकर,
गीत से भी सुदर ।

गीत उसे याद आया,
मन मे विचार आया,
ओठो मे मुस्कराया,
और सीना तान कर
गीत उसने गाया ।

कहिए विचार क्या है आपका ?
शायद यह कहे आप उसको उन्माद था ।
गाता रहा गीत का हर शब्द, हर कडी,
जिसकी आ पहुची थी विदा होने की घडी ।
खडे रहे वहा लोग सभी नासमझ से,
कैदी को घूरते,
भय से सिहरते ।

भय से सिहर उठा मानो वह कारागार,
भाग चला धरती से कायर सा अन्धकार ।
उषा की किरनो मे लाल हुआ आसमान,
लोग यो पुकार उठे---शाबाश, नौजवान !
रस्सी गिरी कधो पर, लोग वहा
ठगे से खडे रहे,
अभी भी माना नीले ओठ नौजवान के
गीत गुनगुनाते रहे ।"

महिला हो गयी अब आपे मे बाहर !
सुबक-सुबक कर बोली वह चीख कर

"तुमने इस तरह यह सुनाई है भयानक बातें,
खुद ही सब देखा हो, मानो वहां
तुम भी मौजूद थे।"

"इसको भयानक क्यों कहती है आप?
गीत गाकर मरने मे भी है क्या पाप?"

कारखाने मे वसन्त

सुवह-सुवह लडकी ने अन्दर घुसना चाहा।
देख कर उसे, गम्भीर इजन यों गुर्राया।
"भीतर जाना मत। मै हूँ जिम्मेदार।
बाहर जा। देख क्या कहता है पहरेदार।"

लेकिन वह छोकरी थी वहुत हठीली।
पूछे-ताछे बिना ही चट अन्दर आ गयी।
प्रेस के ऊपर अब खुली एक खिडकी।
देख मजदूरों को खुश हुई लडकी।

इजन तब करने लगा छू छू-छक-छक।
हाथ चलते थे मजदूरो के रुक-रुक।
इजन फिर भन्नाया, मामला समझ कर,
"निकाल दो यहा मे, इस छोकरी को बाहर।

इस पर बोला दयावान इस्पाती चमचा,
व्यग्य से इजन के ऊपर मुस्कराता हुआ
"चुप रह बूढे, वर्ना होगा तेरा बुरा हाल,
इस छोकरी के लिये कर देगे हडताल।"

इजन की वकझक जब हो गयी बद,
हवा ने आई धरती की सोंधी सुगध।

इजन के पास कुछ गुनगुन शुरू हुई,
धप्-धप् पैरो की आहट सुनायी दी।

जोता था खेतो को खुशी से जिन्होंने,
घोडो जैसे नथने फडकाये अब उन्होंने।
आसमान देखने को खोल दी खिडकी,
गूज उठी चारो ओर हसी और दिल्लगी।

इजन के पीछे मे किसी ने गाली दी,
मनचली छोकरी गीत गुनगुनाने लगी।
जैसे नौजवान ने देखा उसे प्यार से,
झेंप कर चुप हुई प्यार की मार से।

भीतर आया पहरेदार दरवाजा खोल कर,
बोला—जो भी हो यहा, निकलो सब बाहर।
देखा जब माजरा उसने आखे खोल कर,
खोपडी खुजाता हुआ चला गया बाहर।